मैं कौन हूँ?

मैं मिट्टी हूँ —
पाँव में रुलती
घटा में उड़ती
पानी में घुलती
भट्टी में तपतीं

मैं हवा हूँ —
कोई रंग नहीं
कोई रूप नहीं
बस उड़ती फिरती
फ़िजा में लहरातीं
एक- एक को साँसें बाँटती

मैं पानी हूँ —
सब की प्यास बुझाती
नदी में बहती
सागर में मिल जाती
फिर उड़ बारिश बन आती

मैं अग्नि 🔥 हूँ —
सूरज से निकली
मैं रोशनी बिखेरती
मेरे बिन कुछ भी नहीं
मैं ज़िंदगी बाँटती

मैं आकाश हूँ —
मैं अथाह हूँ
कितने ही सूरज
कितने चाँद सितारे
मैं तो असीम हूँ

पाँच तत्वों की
यही है कहानी
किसने कही
किसने जानी
सुनो - मिट्टी के
पुतले की जुबानी।

उपजिंदर